पेरिस
दिसम्बर १५, २००७

सन्देश संख्या १३१

गुरू–पूर्णिमा

अक्टूबर २००७ के अन्तिम सप्ताह में कोलकाता में हुए एक कार्यक्रम के दौरान किसी ने बांग्ला–भाषा में पूछा था कि गुरू–कृपा के आह्वान हेतु आषाढ़–पूर्णिमा क्यो मनायी जाती है?

शिवेन्दु के शरीर से निकले इस प्रश्न के उत्तर ने श्रोताओं को अभिभूत कर दिया । तदनुपरान्त यह अनुरोध किया गया कि इस भारतीय–प्रज्ञा को कभी सन्देश रूप में वेबसाइट पर दिया जाना चाहिए ।

ग्रीष्म–ऋतु प्रतीक है – मन के द्वन्द्व, उत्तेजना एवं विभाजन के अधिकतम ताप एवं दाह का, जो जीवन को नप्राय कर देता है । ठीक इसके बाद आती है वर्षा ऋतु जिसकी फुहारें जीवन को पुनर्स्थापित कर नव–जीवन का संचार करती हैं ।

चाँदनी प्रतीक है – गुरू–प्रक्रिया की प्रज्ञा रूप अपरोक्ष प्रकाश का । मानव–चक्षु देखने की अपनी सीमा के बावजूद चाँदनी के शीतल प्रकाश को देख पाता है । इसके विपरीत, सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश को देखना ईश्वर के प्रत्यक्ष–दर्शन जैसा है और यह मानव–चक्षु को हानि पहुँचाकर पूर्ण अंधत्व तथा अंधकार तक पहुँचा सकता है । इसीलिए चन्द्र–प्रकाश मानव–चित्तवृत्ति के अंधकार को दूर करने के लिए सर्वथा उपयुक्त माना गया है । ईश्वर यानी कि चैतन्य के चकाचौंध करने वाले प्रकाश के समक्ष प्रत्यक्ष रूप से जाने की अपेक्षा गुरु–प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त प्रज्ञा, मानव–मन के अन्धकार को समाप्त करने हेतु अधिक उपयुक्त है । झुलसा देनेवाली ग्रीष्म–ऋतु के उपरान्त वर्षा–ऋतु के आगमन से ताप का नाश और नव–जीवन का संचार हो जाता है। अतः आषाढ़–पूर्णिमा प्रतीक है गुरू–प्रक्रिया का, जिसका उदय विभेदकारी चित्तवृत्ति के ध्वंस के उपरान्त ही होती है ।

इसलिए ग्रीष्म–ऋतु के बाद होने वाले आनन्ददायक प्रथम बारिश के साथ–साथ पूर्णिमा की चाँदनी अर्थात् गुरू–पूर्णिमा का आनन्द लें । प्रत्यक्ष सूर्य–प्रकाश का समय–समय पर अत्यल्प–झलक ही पर्याप्त है । अतः गुरू–प्रक्रिया को उपलब्ध रहें और दिव्य–प्रकाश का कभी–कभी झलक प्राप्त करें ताकि चित्तवृत्ति का मिथ्या विभाजन पूर्णरूपेण भस्मीभूत हो जाय ।

।। जय गुरू–पूर्णिमा ।।